

विधा: कहानी

तेजेन्द्र शर्मा की कहानी 'ईंटों का जंगल' में चित्रित सामाजिक यथार्थ

डेनियल राजेश

शोध सार:

साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब है। साहित्य समाज पर प्रभाव डालता है और समाज साहित्य पर प्रभाव डालता है। इस प्रकार साहित्य और समाज का अटूट संबंध है। सच्चा साहित्य वही है जो समाज के लिए हितकर हो। साहित्य में कहानी विधा का महत्वपूर्ण स्थान है। साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित हिंदी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कहानीकार तेजेन्द्र शर्मा ब्रिटेन में बसे भारतीय मूल के हिंदी कवि, लेखक और नाटककार हैं। आपका साहित्य जगत मानव जीवन के हर पहलू से जुड़ा हुआ है। आप अपने कार्यों से समाज को बेहतर बनाने का भरपूर प्रयास कर रहे हैं। कहानी विधा आधुनिक समय की एक अद्भुत देन है। यह एक ऐसी विधा है जिसे बच्चों के साथ-साथ बड़े भी बड़े चाव से पढ़ते हैं। इसमें बताई गई बातें समाज में बड़ा बदलाव ला सकती हैं। उन्हें समाज के लिए प्रेरणास्रोत माना जाता है। इसे पढ़ने में कम समय लगता है। इसलिए यह हर किसी का मन मोह लेती है। तेजेन्द्र शर्मा ने अपनी कहानी 'ईंटों का जंगल' के माध्यम से विस्थापन के मुद्दों पर विशेष चर्चा की है।

मूल शब्द: तेजेन्द्र शर्मा, सामाजिक यथार्थ, कहानी।

आमुख:

तेजेन्द्र शर्मा जी बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार हैं। प्रवासी लेखकों की कहानियों में आपकी कोई तुलना नहीं है। आप कहानियों को इतने मार्मिक और शानदार ढंग से प्रस्तुत करते हैं कि ऐसा लगता है जैसे कोई चलचित्र चल रहा हो। पाठक अंत जानने को उत्सुक होकर पूरी कहानी पढ़ते हैं। कहानी आपकी पसंदीदा विधा है। आप कहानी को उसी मन और भावना से लिखते हैं, जिस मन और भावना से आप कहानी की कल्पना करते हैं। आपकी कहानियों में जो घटनाएँ घटित होती हैं, वे हमारे समाज में घटित होती देखी जा सकती हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि आपने अपनी कहानियों का विषय और पात्र अपने आसपास के परिवेश और समाज से चुना है। आपने अपनी कहानियों का मुख्य विषय शहरों में होने वाली घटनाओं को आधार बनाया है। आपकी कहानियों के पात्र भी शहरी लोग हैं, जो काम-धंधे, अपने शौक पूरे करने के लिए विदेश तक चलते हैं। 'ईंटों का जंगल' भी शहरी परिवेश से जुड़ी विस्थापन की समस्या पर लिखी गई कहानी है।

तेजेन्द्र शर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व:

तेजेन्द्र शर्मा एक विशिष्ट साहित्यकार हैं। आप कहानी लेखन में सिद्धहस्त हैं। तेजेन्द्र शर्मा का जन्म 21 अक्टूबर 1952 में पंजाब के जगरांव शहर में हुआ। आप कहानीकार, नाटककार, कवि और लेखक हैं। तेजेन्द्र शर्मा की स्कूली पढ़ाई दिल्ली के अंधा मुगल क्षेत्र के सरकारी स्कूल में हुई। दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी विषय में एम०ए० तथा कम्प्यूटर में डिप्लोमा करने वाले तेजेन्द्र शर्मा हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी, उर्दू तथा गुजराती भाषाओं का ज्ञान रखते हैं। उनके द्वारा लिखा गया धारावाहिक 'शांति' दूरदर्शन से 1994 में अंतर्राष्ट्रीय लोकप्रियता प्राप्त कर चुका है। अन्नू कपूर निर्देशित फ़िल्म 'अमय' में नाना पाटेकर के साथ उन्होंने प्रमुख भूमिका निभाई है। वे

'इन्दु शर्मा मेमोरियल ट्रस्ट' के संस्थापक तथा हिंदी साहित्य के एकमात्र अंतर्राष्ट्रीय सम्मान 'इन्दु शर्मा अंतर्राष्ट्रीय कथा सम्मान' प्रदान करनेवाली संस्था 'कथा यू०के०' के सचिव हैं। साहित्य में आपकी गहरी रुचि है।

प्रकाशित कृतियाँ

कहानी संग्रह- काला सागर, ढिबरी टाइट, देह की कीमत, ये क्या हो गया, पासपोर्ट के रंग, बेघर आँखें, सीधी रेखा की परतें, कन्न का मुनाफा, प्रतिनिधि कहानियाँ, मेरी प्रिय कथाएँ, दीवार में रास्ता

कविता एवं गजल संग्रह- ये घर तुम्हारा है... (2007 - कविता एवं गजल संग्रह)

मैं कवि हूँ इस देश का (द्विभाषिक कविता संग्रह)

अनूदित साहित्य- ढिबरी टाइट नाम से पंजाबी (2004), पासपोर्ट का रंगहरू नाम से नेपाली (2006), ईंटों का जंगल नाम से उर्दू (2007) में उनकी अनूदित कहानियों के संग्रह प्रकाशित हुए हैं।

पुरस्कार व सम्मान

भारत में-

- सुपथगा सम्मान 1987
- ढिबरी टाइट के लिये महाराष्ट्र राज्य साहित्य अकादमी पुरस्कार-(1995) (प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के हाथों)
- सहयोग फ़ाउंडेशन का युवा साहित्यकार पुरस्कार-(1998)
- यू.पी. हिन्दी संस्थान का प्रवासी भारतीय साहित्य भूषण सम्मान-(2003)
- प्रथम संकल्प साहित्य सम्मान-दिल्ली-(2007)
- तितली बाल पत्रिका का साहित्य सम्मान-बरेली-(2007)
- केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा का डॉ० मोटूरि सत्यनारायण सम्मान-(2011)
- हरियाणा राज्य साहित्य अकादमी सम्मान-(2012)
- मध्य प्रदेश सरकार का निर्मल वर्मा सम्मान-(2017)
- महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय का 'हिन्दी सेवी सम्मान'-(2018)

विदेश में-

- कृति यू०के० द्वारा 'बेघर आँखें' को सर्वश्रेष्ठ कहानी का पुरस्कार-(2002)
- भारतीय उच्चायोग, लन्दन द्वारा डॉ० हरिवंशराय बच्चन सम्मान-(2008)
- अंतर्राष्ट्रीय स्पंदन कथा सम्मान-(2014)
- ब्रिटेन की महारानी एलीज़ाबेथ द्वारा 'एम०बी०ई०- मेम्बर ऑफ ब्रिटिश एंपायर'-(2017)

'ईंटों का जंगल' कहानी का सार:

'ईंटों का जंगल' कहानी के पात्र नरेंद्र और रोहिणी ने प्रेम-विवाह किया है। दोनों दिल्ली से हैं। नरेंद्र धनी परिवार का है। नरेंद्र के रोहिणी से प्रेम-विवाह करने के कारण उसके परिवारवाले उससे नाराज़ हो जाते हैं और उसे संपत्ति से बेदखल कर देते हैं। जब नरेंद्र को एयरलाइन कंपनी में नौकरी मिलती है तब नरेंद्र और रोहिणी मुंबई आ जाते हैं। मुंबई में पहुँचते ही उन्हें मकान की समस्या खड़ी हो जाती है। पहले एक कान्दिवली में होटल में रहते हैं। सारा शहर ऊँची-ऊँची इमारतों से घिरा पड़ा है - ईंटों का जंगल। उन माचिसनुमा बिल्डिंगों में नरेंद्र

अपने लिए एक घोंसला तलाश रहा था। शहर में तो नए लोगों को कोई किराये पर फ्लैट देने की बात ही नहीं करता।

छोटेलाल नामक एक दलाल की मदद से कोलीवाड़ा में एण्टॉपहिल एरिया में चौथी मंज़िल पर एक मकान मिला। लेकिन उधर भी चेकिंग आदि समस्या का सामना करना पड़ा। और कांट्रैक्ट भी पूरा होनेवाला था। नरेंद्र ने फिर से एक बार फ्लैट की तलाशी शुरू कर दी। एक गुजराती महिला ने अपना अँधेरीवाला फ्लैट किराये पर देना स्वीकार कर लिया। इसलिए नरेंद्र ने छोटेलाल को अपमानित करके एण्टॉपहिल एरिया में से अँधेरीवाला फ्लैट पर जाने के लिए सारा सामान ट्रक पर लदवाकर उधर पहुँचा। लेकिन उधर जाने के बाद ही पता चला कि उस गुजराती महिला ने नरेंद्र को फ्लैट देने से साफ इनकार कर दिया। क्योंकि उसे कोई बीस हजार डिपॉज़िट देने वाला मिल गया था। अब नरेंद्र और रोहिणी इस परेशानी में आ जाते हैं कि रोहिणी तो गर्भवती है और रोहिणी के घरवाले भी बिलकुल उसके डेलीवरी के लिए नहीं आने वाले हैं। कोई उनकी मदद नहीं कर रहा है, बारिश भी हो रही है। मुंबई में बारिश बहुत ज़्यादा होती है। नरेंद्र ने उस गुजराती महिला के कहने पर विश्वास रखते हुए एण्टॉपहिल के घर का पूरा सामान ट्रक में लाद रखा है, ट्रक में सामान है लेकिन घर नहीं है। फिर से वह छोटेलाल के घर की ओर ट्रक मुड़वा दिया। लेकिन छोटेलाल तीन महीने की दलाली लेने के बाद ही उन्हें फ्लैट वापिस देने को तैयार हुआ।

एक दिन नरेंद्र के ऑफिस के नोटिस-बोर्ड पर एक सूचना टंगी देखी कि जुहू में सस्ते दामों में फ्लैट! नरेंद्र अपनी पत्नी के जेवर बेचकर, और कहीं से पैसे की व्यवस्था करके और कर्ज भी लेकर फ्लैट लेने के लिए काणे साहब को पैसे दे देता है। फ्लैट का काम भी धीरे-धीरे चल रहा है। यह सोचकर नरेंद्र भी खुश है कि अपना खुद का फ्लैट हो जाएगा। लेकिन बीच में ही फ्लैट का काम रुक जाता है। नरेंद्र काणे साहब से मिलता है और फ्लैट के काम रुक जाने के बारे में पूछता है। तब काणे साहब कहते हैं कि महँगाई बहुत ज़्यादा बढ़ गयी है तो ज़्यादा पैसे दे दो तभी तुमको उस फ्लैट का पोसिशन मिलेगा, नहीं तो नहीं मिलेगा। अब पहले से कर्ज ले लिए हैं, जेवर बेच दिए हैं इसलिए अब उसके पास पैसे न होने के कारण वह परेशान हो जाता है। तब काणे साहब उसको सलाह देते हैं कि जो पैसे तुमने एडवांस के रूप में भरे हैं उसे वापस ले लो कि फ्लैट तो अब तुम्हें नहीं मिलेगा। यदि मिलेगा तो भी उसका दाम बढ़ जाएगा और वह तो तुम नहीं दे सकोगे।

काणे साहब ने इसमें चतुराई यह दिखलाई है कि नरेंद्र को यह कहते हुए रोक दिया कि तुम फ्लैट नहीं खरीद सकते। लेकिन बिल्डर ने काणे साहब को एक ऐसा तोहफ़ा दिया है जिसके कारण काणे साहब के घर में बहुत सारी चीज़ें आ गयी हैं, बहुत सारे पैसे आ गए हैं। अब उनका रहन-सहन भी एकदम बढ़ गया है। वे दो बार न्यूयार्क का चक्कर भी लगा कर आए हैं। बाद में नरेंद्र को यह मालूम हो जाता है कि काणे साहब का इतना ज़्यादा प्रमोशन तो नहीं हो सकता कि एक जॉब में, तो ये पैसे कहाँ से आ गए। लेकिन अगर वह कुछ नहीं कर पा रहा है तो ईंटों का जंगल उसके लिए महज एक सपना बनकर रह गया है। मुंबई में लोगों को छोटा सा घर मिलना भी, अपना खुद का घर होना भी एक सपना ही है। एक मायावी शहर है मुंबई तो वह सब सपना उसका साकार नहीं होता। यह एक दुखांत कहानी है।

‘ईंटों का जंगल’ कहानी में चित्रित सामाजिक यथार्थ:

सामाजिक यथार्थ (social reality) से तात्पर्य ‘समाज से सम्बन्धित किसी भी घटनाक्रम का ज्यों का त्यों चित्रण ही सामाजिक यथार्थ कहलाता है।’¹ दूसरे शब्दों में, समाज

में घटित होने वाली सञ्जी घटनाओं का यथार्थ चित्रण ही सामाजिक यथार्थ कहलाता है। यथार्थ शब्द का प्रयोग सत्य, वास्तविकता, वस्तुस्थिति आदि कई अर्थों में किया जाता है। साहित्य से ही हमें तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों तथा जन-सामान्य के जीवन का परिचय मिलता है।

डॉ. त्रिभुवन सिंह के मतानुसार "सामाजिक यथार्थ का अर्थ होता है- समाज की वास्तविक अवस्था का चित्रण, परन्तु साहित्य के अंदर किसी भी वस्तु का तद्वत, चित्र उतारकर रख देना कठिन होता है, क्योंकि साहित्यिक चित्र कैमरे द्वारा लिया गया चित्र नहीं होता, बल्कि वह साहित्यकार की कूची के द्वारा चित्रित किया गया एक ऐसा चित्र होता है, जिसमें साहित्यकार के अनुभव एवं कल्पना के सुंदर रंग ढले होते हैं। वह केवल समाज जैसा है वैसा ही उसका वर्णन मात्र नहीं कर देता बल्कि उसको इस रूप में प्रस्तुत करता है, जिससे पाठक युग के सत्य एवं समाज में होने वाले कार्य-व्यापारों के औचित्य तथा अनौचित्य को सरलता से परख सके।"²

सामाजिक यथार्थ की अवधारणा बदलती रहती है। सामाजिक यथार्थ युगीन परिस्थितियों पर अवलम्बित रहता है। "हिन्दी साहित्य कोश में सामाजिक यथार्थ की परिभाषा इस प्रकार दी गई है- सामाजिक यथार्थ दार्शनिक दृष्टि से प्रत्यक्ष जगत से बिल्कुल भिन्न है। प्रत्यय मानव मस्तिष्क से संबंधित है किंतु सामाजिक यथार्थ के भीतर वे शक्तियाँ आती हैं जो मस्तिष्क से बाहर हैं। आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परिस्थितियों का समुच्चय ही सामाजिक यथार्थ है।"³

अंतर विवाह:

'ईंटों का जंगल' कहानी के पात्र नरेंद्र और रोहिणी ने प्रेम-विवाह किया है। लेकिन पिताजी को इनका प्रेम-विवाह पसंद नहीं था। नरेंद्र के पिताजी लाला धर्मराज गरीब परिवार से ही नरेंद्र के लिए बहू लाना चाहते थे और वे दहेज नहीं चाहते थे। लेकिन नरेंद्र के पिताजी का मन जातीय मानसिकता से भरा हुआ था। इसलिए उन्हें प्रेम विवाह पसंद नहीं था। इस बात को हम नरेंद्र के शब्दों में देख सकते हैं - "प्यार! हाँ, यही तो किया मैंने। मैं रोहिणी को प्यार करने लगा तो ऐसा क्या गुनाह हो गया था? पिताजी तो गरीब घर से ही बहू लाना चाहते थे। उन्हें तो दहेज से कोई लगाव नहीं था, किन्तु जात-बिरादरी के मामले में कट्टरपन उनमें जैसे कूट-कूटकर भरा था! लव-मैरेज के नाम से ही उन्हें चिढ़ थी।"⁴ इस कहानी में देखा जा सकता है कि लेखक ने नरेंद्र के पिता के द्वारा दहेज प्रथा के खिलाफ आवाज़ उठाई है और लेखक ने नरेंद्र और रोहिणी के अंतर्विवाह के माध्यम से जाति व्यवस्था को पूरी तरह से नष्ट करने का प्रयास किया है।

विस्थापन:

'ईंटों का जंगल' कहानी में लेखक ने ठीक ही उल्लेख किया है कि किस प्रकार आज मनुष्य विस्थापन के बाद रहने के लिए घर की व्यवस्था करने में परेशान है। शहर में कोई भी अनजान व्यक्ति को जल्दी से घर देने को तैयार नहीं होता। इस कहानी में लेखक ने इसी विषय को इस प्रकार बताया है कि "वहाँ भी फ्लैट मिला क्या आसान था? हर दूसरे घर में दलाल। फ्लैट कि शर्तें सुनकर बहुत घबराहट होती। ग्यारह महीने का किराया इकट्ठा लेने का रिवाज है वहाँ। दो या तीन महीने का किराया दलाली के रूप में भी देना पड़ता है।"⁵ रोहिणी से प्रेम विवाह करने के कारण नरेंद्र के पिता ने उन्हें घर से निकाल दिया था, जिसके कारण नरेंद्र शहर चले गये लेकिन उन्हें शहर में कोई किराया देती घर नहीं मिला।

घर बनाने का सपना:

हर व्यक्ति का सपना होता है कि उसका अपना घर हो। इसके लिए व्यक्ति के पास जो भी आभूषण हो उसे बेचकर घर खरीदने के लिए तैयार हो जाता है। लेखक इस विश्वास को इस कहानी में रोहिणी के माध्यम से व्यक्त करता है। रोहिणी अपने पति नरेंद्र से कहती है कि "सुनिए, जो थोड़ा-बहुत गहना हमारे पास है, उसे बेच देते हैं। एक छोटा-सा घर खरीद लेते हैं। जब हाथ खुला होगा तो गहने फिर से बनवा लेंगे।"⁶

राजनैतिक यथार्थ:

'ईंटों का जंगल' कहानी में लेखक ने यह समझाने की भरपूर कोशिश की है कि आज बिल्डर इतने चतुर और राजनेता हो गए हैं कि गरीबों को घर का सपना दिखाकर उनसे पैसे वसूलते हैं। उस पैसे से वे एक भवन का निर्माण करते हैं और कुछ वर्षों के बाद एक पत्र भेजकर निर्माण सामग्री की महँगाई का पत्र भेजकर फिर पैसे की माँग करते हैं और अगर पैसे नहीं दिए जाते हैं, तो वे उस फ्लैट को अधिक पैसे में दूसरों को बेच देते हैं। इस कहानी में नरेंद्र ने काणे साहब के जरिए बिल्डर से जो फ्लैट खरीदा था, उसे भी बिल्डर ने ऊँचे दाम पर किसी दूसरे व्यक्ति को बेच दिया था। इस कहानी में लेखक कहते हैं कि "फ्लैटों के रेट इस बीच आसमान को छूने लगे हैं। रामप्रकाश एंड कंपनी ने हमारी बिल्डिंग तिगुने दामों पर बेच दी है। काणे साहब के घर एक नयी मोटरसाइकिल, फ्रिज, रंगीन टेलिविजन, म्यूजिक सिस्टम दिखाई देने लगे हैं और उनके पासपोर्ट पर अंकित है कि वह पिछले तीन सालों में दो बार न्यूयार्क का चक्कर लगा आये हैं।"⁷ नरेन्द्र को पता चला कि काणे साहब को एक नौकरी में इतना प्रमोशन नहीं मिल सकता तो फिर इतना पैसा कहाँ से आये। नरेंद्र को उनके पैसे तो वापस मिल गए लेकिन अपना घर बनाने का उनका सपना टूट गया। लेकिन अगर वह कुछ नहीं कर पा रहा है तो ईंटों का जंगल उसके लिए महज एक सपना बनकर रह गया है। यहाँ तक कि मुंबई में लोगों के लिए एक छोटा सा घर लेना या अपना खुद का घर होना भी एक सपना है।

'ईंटों का जंगल' नाम की इस कहानी की शुरुआत भी लेखक ने एक पत्र के जरिए की है और इसका अंत भी एक पत्र के जरिए ही किया है। लेखक ने बताया है कि कैसे एक पत्र कहानी के नायक नरेंद्र के सपनों को धराशायी देता है। उसकी पत्नी भी परेशान हो जाती है। क्योंकि फ्लैट खरीदने के लिए उन्होंने अपने गहने भी बेच दिए थे। नरेन्द्र ने एक-एक रुपया इकट्ठा करके फ्लैट का भुगतान कर दिया था। दोनों पति-पत्नी अपने-अपने घर का सपना देखने लगे। तभी बिल्डर उन्हें एक पत्र भेजता है। उसमें बिल्डर ने लिखा था कि 'गृह-निर्माण की वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि हो गई है। प्रार्थना है कि सौ रुपया प्रति फुट के हिसाब से और जमा करवाएँ, अन्यथा वह बिल्डिंग पूरी नहीं कर पायेगा।' यह पत्र पढ़ते ही नरेंद्र काणे साहब के घर जाकर पूछता है कि "काणे साहब, हमारा पैसा इतने वर्ष रखकर, बिल्डर ने यह क्या पत्र भेजा है?"⁸ काणे साहब नरेंद्र को इस प्रकार उत्तर देते हैं कि "मेरी बात मानिए, झगड़े से कुछ नहीं बनेगा। बिल्डर के साथ लड़ाई लड़ना आसान नहीं है। आप अपने पैसे वापस ले लीजिए। कहीं वो भी किसी लफड़े में न फंस जायें।"⁹ काणे साहब का यह उत्तर सुनकर नरेंद्र उदास हो जाता है। नरेंद्र को उसका पैसा तो मिल गया लेकिन उसका अपना घर होने का सपना टूट गया।

निष्कर्ष:

'ईंटों का जंगल' कहानी लेखक के जीवन की एक घटना पर आधारित है, जिसमें वह अपनी कल्पना का सहारा लेते हुए अपना फ्लैट बुक करने के लिए अपनी पत्नी के गहने गिरवी रख देता है, लेकिन उसे धोखा मिलता है। यहाँ भी लेखक ने मानसिक अवस्थाओं का वर्णन किया है। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने बताया है कि लोगों के लिए घर एक सपनों का महल होता है। इस कहानी के माध्यम से अंतर्विवाह, विस्थापन, घर बनाने का सपना, राजनीतिक यथार्थ आदि मुद्दों को समझाकर समाज को बेहतर बनाने का प्रयास किया गया है।

संदर्भ सूची:

1. <https://hi.wikipedia.org/wiki/> सामाजिक यथार्थ
2. त्रिभुवन सिंह, हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, हिन्दी प्रकाशन पुस्तकालय, दिल्ली, 1986, पृ. 11
3. उद्धृत, बलदेव वंशी का काव्य: सामाजिक यथार्थ, प्रथम संस्करण-2006, पृ. 25
4. तेजेन्द्र शर्मा, सीधी रेखा की परतें (ईंटों का जंगल), वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-2009, पृ. 210
5. वही, पृ. 211,212
6. वही, पृ. 213
7. वही, पृ. 215
8. वही, पृ. 215
9. वही, पृ. 215

डेनियल राजेश,
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
अण्णामलै विश्वविद्यालय,
अण्णामलै नगर – 608 002.

डॉ.एल.तिल्लै सेल्वी,
आचार्या,
हिन्दी विभाग,
अण्णामलै विश्वविद्यालय,
अण्णामलै नगर – 608 002.